प्रातःक्लास ओमशांति 25.1.68

ओमशांति। परमपिता शिव भगवानुवाच। यह तो बच्चों को समझाया गया है श्रीकृष्ण को परमपिता वा भगवान नहीं कहा जा सकता है। यही मुख्य बात है कोई को भी समझाने की। कृष्ण की आत्मा इस समय है तमोप्रधान। उनके लिए भगवानुवाच कहे, अब तमोप्रधान क्या सुनावेंगे। और इस समय है ही रावणराज्य। रावणराज्य के मनुष्य रामराज्य कैसे स्थापन करेंगे? मनुष्यों की बुद्धि ही मारी हुई है। पत्थर बुद्धि हैं। पत्थर बुद्धि कहने से ही बिगर पड़ते हैं ;क्योंकि क्रोध है ना। जब किसको समझाया जाता है तो उनसे यह तो पूछना चाहिए। अभी रामराज्य चल रहा है या रावणराज्य। गांधी की भल महिमा करते हैं ;परंतु ऐसे थोड़े ही कहेंगे गांधी रामराज्य स्थापन करके गए। दिन–प्रतिदिन हंगामें होते रहते हैं। इनको थोड़े ही रामराज्य कहा जावेगा। मनुष्य समझते हैं इतनी बत्तियां,एरोप्लेन ,बड़े2 महल बने हैं इसलिए इनको ही रामराज्य कहा जाता है। समझान भी डिफीकल्ट है। तब ही तो बाप कहते हैं कोटों में कोउ। भक्तिमार्ग में तो सभी जाकर सुनते हैं। जन्म–जन्मांर सुनते आये हैं। तुम तो एक ही बार इस अंतिम जन्म में बाप द्वारा ही सुनते हो पावन होने लिए। वह तो जन्म–जन्मांतर सुनते आते। बड़ी बात क्या हुई? स्वर्ग तो इनको कह नहीं सकते। स्वर्ग तो बहुत छोटा होता है। एक राज्य ,एक धर्म होता है। यह तो है ही रावणराज्य। आसुरी राज्य। बाप को ही आकर दैवी समाज स्थापन करनी है। तो समझाना चाहिए हम रावण सम्प्रदाय के हैं। रामसम्प्रदाय तब होते हैं जब थोड़े मनुष्य होते हैं। नई दुनियां होता है। वह तो अब हैं नहीं। स्थापना हो रही है। सतयुग तब कहा जाये जब दैवी राज्य हो। यह समझने में भी बड़ी बुद्धि चाहिए। पहले तो बाप को जाने ,थोड़ा बाप को याद करे तो बुद्धि पल्टा खाये। याद न करने से बुद्धि पल्टा खाती नहीं है। राम को जानते ही नहीं। अपन को आत्मा समझना इसमें ही मूंझते हैं। हे प्रभु, हे भगवान कहते हैं ;परंतु प्रभु का अर्थ नहीं समझते। प्रभु को जानते ही नहीं। तुमने जो शिवबाबा के गुण लिखे हैं वह कोई जानते थोड़े ही हैं। कृष्ण के भी ऐसे गुण बनानी चाहिए। उसमें कृष्ण का चित्र होगा। शिव तो है ही निराकार। गीता ज्ञान दाता परमपिता परमात्मा शिव। अब शिव काका की महिमा का चित्र बनाया है। यहां क्यों नहीं बनाय भेज देते हैं। नई चित्र बनाई है तो बाबा पास तो भेजना चाहिए ना। इसको कहा जाता है अल्प बुद्धि। भल नये2 चित्र बनाते हैं। बाबा आफरीन तो देते हैं ना। विचार–सागर–मंथन कर चित्र बनाते हैं। कृष्ण का भी ऐसा बनना चाहिए। वह निराकार ,वह साकार। भगवान साकार तो होता नहीं। बाप को ही नहीं जानते तो गोया नास्तिक हो गया। बाप आकर रचता और रचना के आदि,मध्य,अंत का नालेज देते हैं। बाप नालेजफुल तो बच्चे भी नालेजफुल बनते हैं। तुम्हारी बुद्धि में विश्व के रचता बाप और रचना के आदि,मध्य,अंत का नालेज है। वह हड्डी अंदर में याद रखनी चाहिए ;परंतु तुम भूल जाते हो। इसलिए स्थाई खुशी नहीं रहती है। रचता और रचना को तो जान गए फिर दैवी गुण भी धारण करनी है। आसुरी गुण चल न सके। बुद्धि कहती है हम सतयग आदि से लेकर कलियुग अंत तक पार्ट बजाया है। 84जन्म भी आत्मा ही लेती है। इस छोटी आत्मा (में) कितनी नालेज है। यह भी वंडर है ना। नालेज ही अविनाशी है। इनका फल अविनाशी पद मिलता है। ऐसे नहीं सतयुग में तुम यह नालेज किसको देंगे। नहीं। तुम्हारे में नालेज मर्ज हो जाती है। पिछाड़ी में तुमको भी कहेंगे नालेजफुल बाप के बच्चे नालेजफुल। सबमें तो फुल नालेज नहीं होगी। नम्बरवार आते हैं। जिसमें जास्ती नालेज होगी वह उंच पद पायेगा। उस पढ़ाई में भी ऐसे होता है। गवर्नर, परवीकाउन्शल का मेम्बर पढ़ाई से ही बनते हैं ना। कोई को शाल्ड बुद्धि होती है। कोई की डल बुद्धि होती है। समझना चाहिए हमारी बुद्धि डल है जिस कारण हम इतना पढ़ नहीं सकते। पद भी कम हो पड़ेगा। बाप तो है निराकार। उनसे कैसे पूछ सकते हैं। जरूर साकार से ही पूछना पड़े। फिर रेसपां साकार करे वा निराकार करे। रेस्पांड ऐसा करेंगे जिससे सिद्ध होगा तुम इतना उंच पद पाय नहीं सकेंगे। भल सरेंडर किया है ;परंतु वह तो खाते2 पूरा हो जाता

है ना। स्कूल में पढ़ते हैं खाना तो अपना खाते हैं ना। पहले से ही जमा कराय देते हैं। सर्विस कुछ नहीं करते, खाते ही रहते हैं तो.... पद क्या होगा? भल घर में रहते हैं ,माला में थोड़े ही पिरोये जा सकते हैं। दास–दासियों को माला में पिरोयेंगे क्या? न पढ़ते हैं तो पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। दास–दासियों पर बड़ों का हुकुम चलता है। हरेक के पुरुषार्थ से देखा जाता है। कोई तो कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते हैं। सिर्फ खाते–पीते रहते हैं। जो दिया है उससे भी जास्ती खाते–पीते रहते हैं। तो यज्ञ का बोझा भी हो जाता है ना। बाहर में जाकर सर्विस भी करनी चाहिए ना। जैसे प्रेम प्रकाश बच्चा गया है गुल्जारी लाल नन्दा के पास। जरूर बुद्धि है तब तो गया ना। बुद्धि जिनमें है बात करने की ताकत है वह ही सामने जावेंगे ;क्योंकि आसुरी सम्प्रदाय हैं माया के मुरीद। कुछ पोजिशन मिला है तो उनको भी समझाना पड़ता है। फिर भी गवर्मेंट है। यह भी है गुप्त गवर्मेंट। पाण्डव गवर्मेंट और कौरव गवर्मेंट, नाम तो है ना ;परंतु पाण्डव गवर्मेंट कौन सी है यह समझते नहीं। पाण्डवों को राज,ताज कहां था? कौरव गवर्मेंट को भी राज–ताज नहीं है। दोनों ही ताजलेस हैं। ताज ही नहीं तो उनको राज्य कैसे कहेंगे? ताज वालों को भी प्रजा बनाय दिया है। भारत की ही बात है। बाहर में कितने किंग्स ,शाहनशाह आदि थे। सबको गिराते रहते हैं। सबकी राजाई ही चट हो जावेगी। सिविलवार में राजाई थोड़े ही होती है। मनुष्य मनुष्य में लड़ते रहते हैं। आगे राजायें सेना साथ लड़ते थे। अभी सेना तो है नहीं। मनुष्य मनुष्य में(से) लड़ पड़ते हैं। यह है फाइनल सिविल वार। तुम किसको भी चित्र पर समझाओ जब यह सतयुग था तो सिर्फ देवी–देवता धर्म ही था। बहुत छोटा झाड़ था। फिर जरूर वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट होनी चाहिए। रामराज्य स्थापन होगा तो जरूर रावणराज्य का विनाश भी होगा। रामराज्य तो एक ही था। एक ही धर्म था। अभी रावणराज्य है तब तो मांगते हैं रामराज्य हो। पीस हो ;परंतु पीस कब थी दुनियां पर? साथ में चित्र जरूर ले जाना चाहिए। चित्र से झट समझ जावेंगे। चक्र वाला चित्र बड़ा क्लीयर है। रामराज्य ,रावणराज्य। रामराज्य नई दुनियां सतयुग को ही कहा जाता है। अभी तो पुरानी दुनियां रावणराज्य है। कितने ढेर मनुष्य हैं। चित्र आगे समझाने झट समझ जावेंगे। कहेंगे यह बातें तो ठीक हैं। हम तो रावणराज्य में हैं। रामराज्य कहां है? कोई2 एम.पी. भी कहते हैं रावणराज्य है ;परंतु समझते नहीं हैं। दुःख देखकर कह देते हैं। तुमने यह चित्र बनाई है अच्छी रीत समझाने लिए। तो चित्र जरूर ले जानी चाहिए। यह है रामराज्य, यह है रावणराज्य। अभी तुम कहां हो? सतयुग रामराज्य में तो बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। अभी तो कितने ढेर मनुष्य हैं। समझानी देनी होती है। बार2 समझाते हैं आखिरीन समझ (जावेंगे)। तुम भी यथार्थ रीत समझते हो। आगे थोड़े ही इतनी खुशी थी। अभी तो प्वाइंट बहुत ही मिलती है। जो अच्छी रीत धारण करते हैं वही अच्छी रीत समझाय (सकते) हैं। देहाभिमान होने कारण हिम्मत नहीं होती किसके पास जाने की। बहुतों से मिल तो सकते हैं ना। जो गीता को समझने वाला हो। जैसे यहां मिनिस्टर होकर गया तो किसको दिखाय सकते हैं। यह भी होकर गया है। बाकी समझा तो कुछ भी नहीं। बड़ा पद जो मिला है तो उसमें ही रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं। यहां तो कहा जाता है शरीर से अलग अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। नहीं तो धन, मर्तबा आदि याद पड़ता रहेगा। बस पुरानी दुनियां (में) तुम्हारा कोई मर्तबा ,पोजिशन नहीं। अभी तुम संगम पर खड़े हो। कोई ने किनारा छोड़ा है, कोई ने नहीं। समझते हैं हम अभी जा रहे हैं। किनारा छोड़ा तो फिर यह सब भूलना होता है। देह के सम्बंध कुछ भी याद न रहे। यह नई सृष्टि रची जाती है यह तो सम्बंध ही सिम्पुल है। सिर्फ बाप और बच्चे। हम सभी आत्माएं भाई2 हैं। कितना छोटा सम्बंध है। सभी वंडर खाते हैं। यह ज्ञान फिर कहां का है? ऐसा तो कब नहीं सुना। ब्रह्मा के चित्र पर भी खिट–पिट करते हैं। दिखाना चाहिए इनको तो उपर भी दिखाते हैं , नीचे भी दिखाते हैं। यह 84जन्म वाला खड़ा है ना।

सतयुग में थोड़े ही इनको दिखाते हैं। समझाने की बहुत युक्तियां हैं ;परंतु हमारे बच्चों की ही बुद्धि में नहीं है। कुछ भी नहीं जानते। खान–पान ,चलन जैसे जनावरों मिसल है। समझना चाहिए दैवी गुण हमारे में नहीं है। तो औरों को कैसे समझावेंगे? सिर्फ शिवबाबा कहने सीखे हैं। वह तो छोटे बच्चे भी कह देते हैं। अच्छा2 महारथी इतना सर्विस पर निकलते नहीं। जिनमें ज्ञान कम है वह भी चले जाते हैं। कोशिश करते हैं वह भी अच्छा है। यह है सच्चा नाम दान। शिवबाबा का परिचय देना यह नाम दान हुआ ना। वह दान आदि करते हैं तो अल्पकाल का सुख मिलता है। समझो नानक का नाम दान फिर उनको याद करते हैं। और मित्र–सम्बंधियों आदि से बुद्धि निकाल फिर उनको याद करते हैं। समझते हैं यह गुरू है। अब तो पिछाड़ी आकर हुई है ना। तुमको कहते हैं तुम भी कोई अपनी सम्प्रदाय स्थापन कर रहे हो। बोलो तुम हो मानव मत के सम्प्रदाय, हमारी है ईश्वरीय मत की सम्प्रदाय। प्वाइंट्स तो बहुत है ना। जैसा2 मनुष्य वैसे प्वाइंट हैं। हर एक मेजैहब(मजहब) लिए अपनी प्वाइंट है। हिंदुओं के लिए तो बहुत प्वाइंट है। देवताओं की पूजा करने वाले ,गंगा स्नान करने वाले ढेर हैं। अब सारी देहली में पानी कहां से आता है? गंगा–जमुना का ही है ना। फिर फर्क क्या रहा? पानी तो माना पानी है। यह है सारी अंधश्रद्धा। समझते हैं गंगा पतित–पावनी है। अरे, तुम्हारे पेट में रोज वह पानी जाता रहता है ;परंतु कोई की दूरंदेश बुद्धि नहीं। इसको कहा जाता पत्थर बुद्धि। जनावर बुद्धि। इलाहाबाद में कितना मेला लगता है। अब वहां जो भी आते हैं मेले में पानी कहां से पीते हैं? वहां से ही पानी मशीन द्वारा निकल सारे शहर में जाता है। सिंध में सिंधु नदी का ही पानी सब तरफ जाता है। मनुष्यों को बुद्धि न होने कारण फिर भी ढेढ पर, फूलेली पी जाये स्नान करते हैं। अब हम ऐसे थोड़े ही करेंगे। .....तो जब तुम कोई से मिलने जाते हो रामराज्य और रावणराज्य का दोनों चित्र सामने रखो। बोलो अभी कौन सा राज्य है। इनकी तिथी–तारीख भी लगी हुई है। मनुष्यों की बुद्धि कितनी तमोप्रधान होती जाती है। तो बच्चों को सर्विस का शौक होना चाहिए। बहुत ही थोड़े हैं जिनको सर्विस बिगर सुख नहीं आता। जैसे मनोहर है। चक्र लगाती ही रहती है। कहां भी जाने में डरती नहीं। उर्मिला बच्ची है , हिम्मत रख कहां2 चली जाती है। साथी भी मिल जाते हैं। फिर नये2 गांव में जाय सर्विस करती है। प्रबंध भी मिल जाती है। समझ सकते हैं कोई होशियार आवे तो और ही जलवा दिखाय सकते हैं। फिमेल्स आगे मेल्स बहुत आवेंगे। यूं तो साधु–सन्यासी आदि मेल ही हैं। उन्हों के आगे....फिमेल्स जाती हैं। माता हो तो मदद मिलती है। तुम सुनाते ही ऐसी बातें हो जो कोई भी सुना न सके। आगे चल बहुत निकलते रहेंगे। फंसे हुए भी बहुत हैं। ज्ञान धारण नहीं करते हैं तो वह भी जैसे फंसे हुए हैं। सभी याद पड़ते रहते हैं। बाप तो कहते हैं सर्विसेबुल चाहिए। दिल पर भी वही रहते हैं। सर्विस ही नहीं करते तो कब न समझना चाहिए हम दिल पर चढ़े हुए हैं। सर्विसएबुल बच्चों को ही बाप याद करते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप को कितना तरस पड़ता है। परमधाम से आया हूं पुरानी दुनियां में। बाप है ही पतित–पावन। आते भी हैं पतित दुनियां में ;परंतु अपन को कोई पतित समझते थोड़े ही हैं। जब बाप आकर राजयोग सिखावे तब (समझे)। बताना चाहिए यह है रामराज्य। यह रावणराज्य। श्रीकृष्ण को पतित–पावन तो नहीं कहेंगे। वह तो पुनर्जन्म में आते हैं। पूरे 84जन्म लेते हैं। यह सब बातें समझानी होती हैं। विचार–सागर–मंथन भी सर्विस करने वालों को ही चलेगा। सर्विस नहीं कर सकते हैं तो विचार–सागर नहीं चल सकता। मित्र–सम्बंधियों का बंधन है या देहाभिमान है। इसलिए वह देह के सम्बंधी आदि रहते हैं। देहीअभिमानी हो तो ऐ बाप ही याद रहे। सबको देहीअभिमानी बनाने का ही पुरुषार्थ करना है। देहाभिमानी देह को ही याद करते हैं। भल शिव की पूजा करते हैं ;परंतु समझ थोड़े ही है। तुम तो आक्युपेशन को जानते हो। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार ,गुडमार्निं और नमस्ते–नमस्ते। ओम।